महकते रिश्ते का सच

चन्द्रशेखर कुमार, शोधार्थी

सी॰बी॰एस॰ईः यू॰जी॰सी॰-नेट

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय भागलपुर

मालती जोशी की कहानी 'महकते रिश्ते' में मध्य वर्गीय परिवार के बिखराव के मध्य रिश्तों की प्रगाढ़ता की संवेदना को स्वर मिला है। लेखिका ने इस कहानी में एक मध्य वर्गीय परिवार के रिश्ते के सच को पाठक वर्ग के समक्ष उजागर किया है।

डॉ॰ बुंदेला मिसेज त्रिपाठी का पेपर्स जाँच करती हुई सीनियर डॉक्टर से कहती हैं : ''लेकिन मैडम, क्या इस स्टेज में ऑपरेट करना ठीक होगा, क्या वे सस्टेन कर पाएँगी?'' (1) उन्हें भय है कि उम्र के इस पड़ाव में मिसेज त्रिपाठी ऑपरेशन के बाद सस्टेन कर सकेगी? सीनियर डॉक्टर, डॉक्टर बुंदेला को जवाब देते हुए कहती है कि

इसके अलावा दूसरा कोई चारा भी तो नहीं है। डॉ0 बुंदेला रोगी के चेकअप के लिए उनके कमरे में प्रवेश करती हैं। उनके मुहँ से शब्द निकलता है:

"बड़े भैया आप

गुड़िया तू।"(2)

उस कक्ष में डॉ0 बुंदेला की भेंट बड़े बाबूजी के बड़े लड़के और बड़ी माँ से होती है। उसे देखकर उनकी बड़ी माँ और बड़ा भाई अपनी सारी चिंता और दुःख को भूल जाते हैं । वह बिना चेकअप किये वापस हो जाती है। वह नर्सिंग होम से निकलकर सीधे घर माँ के पास आती है। उसकी माँ सारी कहानी सुनकर रो पड़ती है। वे कहती हैं कि उनकी जेठानी बीमार है, और उसे किसी ने खबर भी न की।

डॉ0 बुंदेला के पिता यह सुनकर उबल पड़े। उन्होंने अपनी बेटी को अपने भतीजे सुरेश से तनिक भी रियायत करने को नहीं कहा। डॉ0 बुंदेला की शादी में उनके बड़े पापा के परिवार के एक भी सदस्य शामिल नहीं हुए थे; क्योंकि डॉक्टर साहिबा ने एक डॉक्टर साहेब (अजय) से अंतर्जातीय विवाह किया था। लेखिका कहती हैं :"मेरे अंतर्जातीय विवाह का सबने बॉयकॉट किया था। इस बात को वे भूल नहीं सकते। मन से या बेमन से, उन्होंने भाई के चारों बच्चों की शादी में शिरकत की, यथाशक्ति सहायता भी की थी। पर उनकी इकलौती बेटी की शादी में

सब लोग ठेंगा दिखा गए। इस अपराध को वे कभी क्षमा नहीं कर सकते।'' (3)

डॉ0 बुंदेला के पिता अपने भाई के परिवार को विशेष सुविधा देने से बेटी को मना करते हैं। किन्तु, उनकी माँ के प्राण जेठानी के परिवार वालों में बसते हैं। वें बेटी से कहती हैं : ''उल्टा-सीधा क्यों होगा। इतने दिन कॉलेज में क्या घास छीलती रहीं और छुट्टी लोगी तो क्या अच्छा लगेगा? अपने लोग होते किसलिए हैं?''(4)

डॉ0 बुंदेला अपने रिश्तेदार होने के कारण ऑपरेशन करने से घबराती हैं। यहाँ तक कि वे छुट्टी लेने का इरादा कर लेती हैं। उनके हृदय में अपनी बड़ी माँ के प्रति अगाध श्रद्धा का भाव है। वे अपने पति अजय से कहती हैं : ''जानते हो तुम मेरी बड़ी माँ के बारे में बात कर रहे हो। कुछ तो लिहाज करो।''(5)

डॉ0 बुंदेला के बड़े ताऊजी और पिताजी दादी की मृत्यु के बाद ही अलग हो गए थे। उन लोगों में संपत्ति के बँटवारे के लिए कोट-कचहरी भी हुआ। इस कारण से रिश्ते में कड़वाहट हुई। दुश्मनी चरम पर पहुँच गई। उनकी शादी में ताऊ जी के परिवार से एक भी सदस्य नहीं आए। इस परिस्थिति में डॉ0 बुंदेला के पिता जी और ताऊ जी के परिवार न तो जुड़ ही सके और न तो पुरी तरह से टूट ही सके।

उसकी दादी ने अपने बेटों को कसम दे रखी थी कि जब तक वे जिन्दा हैं, तब तक घर के टुकड़े न करें।

डॉ॰ बुंदेला की माँ और बड़ी माँ में कभी झगड़ा नहीं हुआ। लेकिन वे कभी आपस में बैठ कर बातें भी नहीं करते थे। दादी की सेवा & टहल के बहाने उन लोगों ने आपस में काम का बँटवारा कर लिया था। उनकी तेरही के बाद घर में दो चूल्हे हो गए। घर का बँटवारा हो गया ! किन्तु, हृदय का नहीं। डॉ॰बुंदेला के परिवार वाले घर में ऊपर पर रहते थे, और ताऊ जी के परिवार वाले नीचे। फिर भी वे आपस में कटे हुए नहीं थे। ऊपरवाले, नीचे वाले का खयाल रखते थे और नीचे वाले, ऊपर वाले का खयाल रखते थे। पापा घर से बाहर रहते थे, तो ताऊ जी के लड़के चुप-चाप सब्जी लाकर रख देते थे। उनसे दाम पूछने की माँ की हिम्मत नहीं होती थी। यदि कहीं माँ और उनकी जेठानी को घर से बाहर जाना होता था, तो वे घर से अलग-अलग निकलते थे, किन्तु बाहर वे पास-पास बैठती थीं ।

एक बार डॉ॰बुंदेला अपनी सहेलियों के साथ चाट खाने के लिए बाजार गई थीं। वहाँ पीछे से उनके ताऊ जी के बड़े लड़के की आवाज आई :

"गुड़िया ! ये क्या हो रहा हैं"?(6)

इसे सुनकर गुड़िया मारे शर्म के कुछ नही बोल सकीं।

उसके बड़े भैया कहते हैं :" चलो दफा हो जाओ यहाँ से। और सीधे घर जाओगी समझी"(7) गुड़िया सभी सहेलियों के साथ वापस घर लौट जाती है। रास्ते में उसकी एक सहेली कहती है: "ये, तुम लोग तो, अलग हो गए हो न" (8)

दूसरी सहेली कहती है:

" फिर ये इतना रौब क्यों झाड रहे थे?"(9)

गुड़िया घर पहुँचकर माँ से ठीक उन्ही शब्दों में सारी बात कह देती है। माँ ने जवाब में ऐसा करारा झापड़ मारा की उसकी झुनझनाहट आज भी उसे याद है।

दूसरा प्रसंग डॉ॰बुंदेला के पी॰एम॰टी॰ के रिजल्ट का है। उन्हें मेरिट लिस्ट में छठा स्थान मिला था। उसके पापा उन्हें लूना गाडी देने और मोहल्ले भर में मिठाई बाँटना चाहते थे, लेकिन उसकी माँ ने मना कर दिया; क्योंकि ताऊजी का लड़का महेश फेल हो गया था ।सारा प्रोग्राम स्थगित हो गया।

डॉ॰बुंदेला की बड़ी माँ मिठाई से भरा कटोरदान लेकर ऊपर आई। उसकी माँ ने जिज्जी के पैर स्पर्श करते हुए पूछा : "जिज्जी प्रसाद काहे का है।

अरे मेरी बिटिया मेडिकल में चुन ली गई है न! वो क्या कहते हैं मेरिट में नंबर आया है न। उसी की मिठाई बाँट रही हूँ। लो तुम भी मुँह मीठा कर लो।''(10) इस प्रकार दोनों परिवार के मध्य आत्मीय प्रेम संबंध का स्पष्ट स्वरूप उजागर होता है। एक-दूसरे के सुख-दुःख में हिस्सेदार बनकर अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करना मानवीय प्रेम की आदर्श स्थिति है।

बड़ी माँ स्वयं के कर्त्तव्य का स्मरण करती हुई कहती है ''छोटी ! तुमलोग तो एकदम अंग्रेज हो गए हो। घर में इतनी बड़ी खुशी हो गई पर कुलदेवता पाँच पैसे की मिसरी का भोग भी न पा सके। तुम लोगों को तो सब सोहाता है भाई। पर मैं तो बड़ी हूँ न। मुझे तो ऊँच-नीच देखनी पड़ती है।''(11) आगे वे कहती हैं कि मैं बिटिया से ही इलाज करवाऊँगी। डॉ0बुंदेला की माँ जेठानी से कहती हैः ''इस बेवकूफ से इलाज करवाकर आपको मरना है क्या जिज्जी?' अरे मरना ही होगा तो अपनी बिटिया के हाथों मरूँगी। समझी। उन कसाइयों को जस क्यों दूँ।''(12)

दोनों परिवारों की दूरी बड़ती ही चली गई। और उसमें डॉ0 बुंदेला का अंतर्जातीय विवाह आखिरी आघात साबित हुआ। डॉ0 बुंदेला कहती हैं कि ''पर कहाँ, आज माँ को, बड़ी माँ को देख-सुनकर लगा कुछ भी तो समाप्त नहीं हुआ। रिश्तों का वह महक अब भी उतनी

ही ताजी है। समय की गर्द, विवादों की आँधी उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाई हैं।''(13)

डॉ$_0$ बुंदेला बड़ी माँ के ऑपरेशन में शामिल होने का निर्णय करती हैं। उसे घबराहट होती है कि ऑपरेशन के वक्त कुछ अघटना न घट जाए। उन्हें अपनी बड़ी माँ के कहे हुए वे शब्द याद आते हैं : ''मरना ही हो होगा तो अपनी बिटिया के हाथों मरूँगी । उन कसाइयों को जस क्यों दूँ।''(14) इस प्रकार इस कहानी में मालती जोशी ने रिश्तों की महक के सच को रूपायित किया है।

संदर्भ सूची:

(1) जोशी, मालती, महकते रिश्ते, साक्षी प्रकाशन दिल्ली-2010, पृष्ट सं॰-20

(2) वही, पृष्ट सं॰ - 21

(3) वही, पृष्ट सं॰ - 22

(4) वही, पृष्ट सं॰ - 23

(5) वही,पृष्ट सं॰ - 23

(6) वही, पृष्ट सं॰ - 26

(7) वही, पृष्ट सं॰ - 26

(8) वही, पृष्ट सं॰ - 26

(9) वही, पृष्ट सं॰- 26

(10) वही, पृष्ट सं॰- 28

(11) वही, पृष्ट सं॰ - 28

(12) वही, पृष्ट सं॰ -28-29

(13) वही, पृष्ट सं॰ - 29

(14) वही, पृष्ट सं॰ - 30